Bihari ke Dohe in Hindi : बिहारी के दोहे

बिहारी रीतिकाल के प्रमुख कवि माने जाते हैं, "बिहारी सतसई" उनकी एक मुख्य रचना है बिहारी की रचना मधुर और मनमोहक (Sweet and charming) हैं बिहारी के कुछ प्रसिद्ध दोहे निम्नलिखित है –

मेरी भववाधा हरौ, राधा नागरि सोय ।
जा तन की झाँई परे स्याम हरित दुति होय ।।

कोटि जतन कोऊ करै, परै न प्रकृतिहिं बीच ।
नल बल जल ऊँचो चढ़ै, तऊ नीच को नीच ।।

नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास यहि काल ।
अली कली में ही बिन्ध्यो आगे कौन हवाल ।।

नीकी लागि अनाकनी, फीकी परी गोहारि ।
तज्यो मनो तारन बिरद, बारक बारनि तारि ।।

चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न स्नेह गम्भीर ।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर ॥

कब को टेरत दीन ह्वै, होत न स्याम सहाय ।
तुम हूँ लागी जगत गुरु, जगनायक जग बाय ।।

सतसइया के दोहरा ज्यों नावक के तीर ।
देखन में छोटे लगैं घाव करैं गम्भीर ।।

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ ।
ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जलु होइ ॥

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय ।
सौंह करै, भौंहन हँसै, देन कहै नटि जाय ॥

कहति नटति रीझति खिझति, मिलति खिलति लजि जात ।
भरे भौन में होत है, नैनन ही सों बात ॥

– Anmol Gyan India –